स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

वार्षिकी

Digital India
Power To Empower

2018

भारतीय साहित्य सर्वेक्षण

(ई-संस्करण सहित)

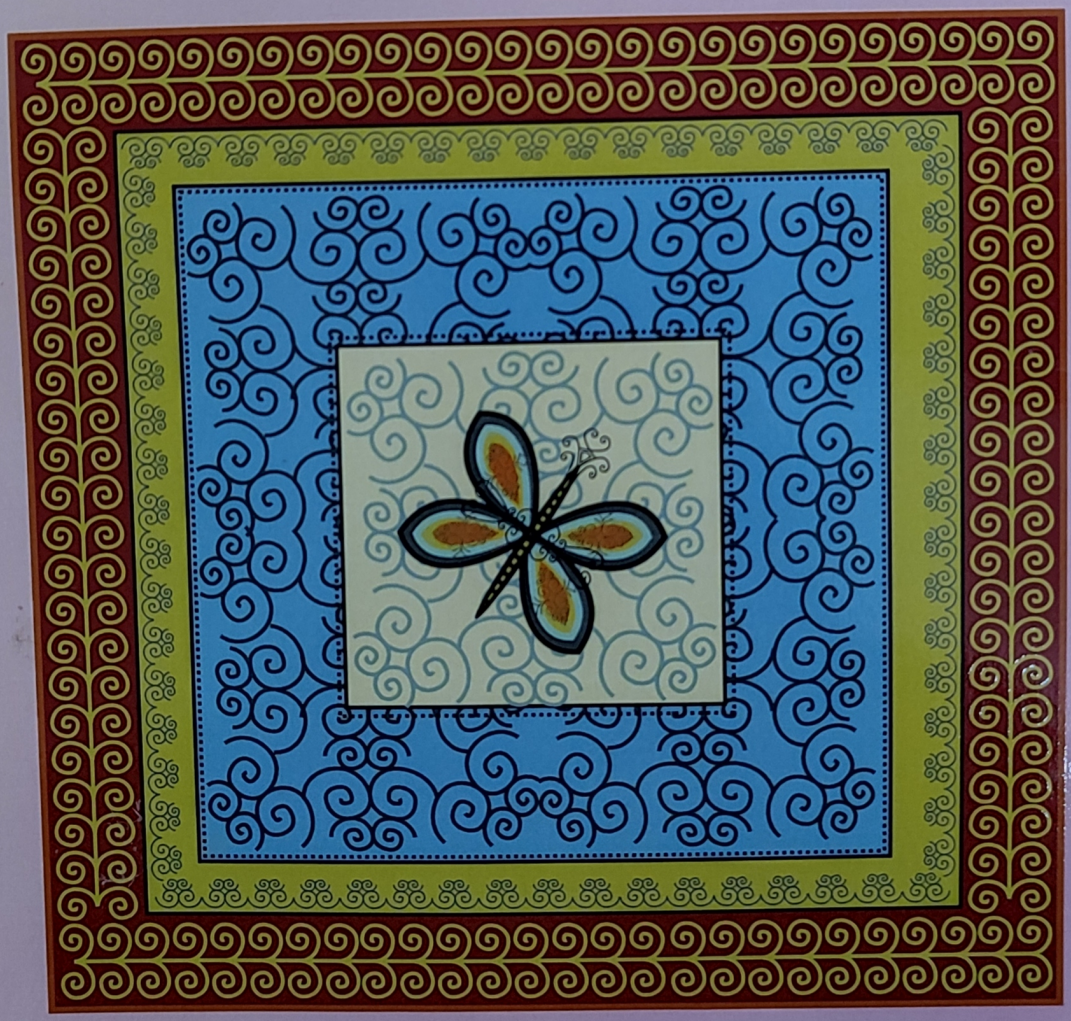

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

वार्षिकी : 2018

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से			05
संपादकीय			07
लेख			
1.	असमिया साहित्य	डॉ. अनुशब्द	9
2.	ओड़िया साहित्य	डॉ. अरुण होता	13
3.	उर्दू साहित्य	डॉ. जुबैदा एच. मुल्लाँ	24
4.	कन्नड साहित्य	डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'	32
5.	कश्मीरी साहित्य	डॉ. महाराजकृष्ण भरत 'मुसा'	44
6.	कोंकणी साहित्य	डॉ. चंद्रलेखा डिसौज़ा	48
7.	डोगरी साहित्य	ओम गोस्वामी	60
8.	तमिल साहित्य	डॉ. बी. संतोष कुमारी	74
9.	तेलुगु साहित्य	डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा	77
10.	नेपाली साहित्य	ज्ञानबहादुर छेत्री	82
11.	पंजाबी साहित्य	प्रो. फूलचंद मानव	91
12.	मणिपुरी साहित्य	डॉ. ह. सुवदनी देवी डॉ. येंखोम हेमोलता देवी	94
13.	मैथिली साहित्य	वैद्यनाथ झा	105
14.	संस्कृत साहित्य	डॉ. अजय कुमार मिश्र	113
15.	सिंधी साहित्य	डॉ. सुरेश बबलाणी	125
16.	हिंदी आलोचना	डॉ. आलोक रंजन पांडेय	133
17.	हिंदी उपन्यास	डॉ. तरसेम गुजराल	137
18.	हिंदी कहानी	प्रो. अवध किशोर प्रसाद	149
19.	हिंदी कविता	प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय	165

20.	हिंदी ग़ज़ल	डॉ. रोहिताश्व अस्थाना	181
21.	हिंदी बाल साहित्य	डॉ. पुष्पेंद्र कुमार शर्मा	189
22.	हिंदी भाषाविज्ञान साहित्य	डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त	197
23.	हिंदी विज्ञान साहित्य	डॉ. शिवगोपाल मिश्र डॉ. बलराम यादव	205
24.	हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य	डॉ. सी. जयशंकर बाबु	222
संपर्क सूत्र			235

1

असमिया साहित्य

डॉ. अनुशब्द

असमिया साहित्य एक समृद्ध, सुचिंतित और सुविकसित साहित्य है। असम के शंकरदेव-माधवदेव काल से ही असमिया साहित्य सतत प्रवाहमान रहा है। असमिया भाषा एवं सहित्य पर अखिल भारतीय 'भक्ति आंदोलन' का भी व्यापक प्रभाव रहा है। भक्ति आंदोलन के प्रभाव से असमिया साहित्य और अधिक प्रभावशाली बन गया। इस काल के सबसे प्रख्यात कवि महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव (1449-1568) हैं, जिन्होंने बरगीत, अंकिया नाट और भक्ति तत्व मूलक विशिष्ट एवं विविध रचनाओं का सृजन किया। शंकरदेव के शिष्य माधवदेव ने भी अपनी भक्तिपरक रचनाओं से असमिया साहित्य को काफी समृद्ध किया। आधुनिक काल के लेखकों में सबसे अधिक प्रभावशाली लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा हैं, जिन्होंने 1889 में साहित्यिक मासिक पत्रिका जोनाकी (चांदनी) का संपादन प्रारंभ किया।

असमिया साहित्य की इस आरंभिक पत्रिका 'जोनाकी' में लिखने वाले साहित्यकारों को 'जोनाकी समूह' के नाम से जाना जाता है। इस समूह के प्रमुख साहित्यकार हैं- लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा, हेमचंद्र गोस्वामी, चंद्र कुमार अगरवाला तथा रजनीकांत बरदलै आदि। इसके अलावा आधुनिक असमिया साहित्य में दार्शनिक कवि के रूप में कमलाकांत भट्टाचार्य, प्रकृति के कवि रघुनाथ चौधरी, मुक्तक व सॉनेट के कवि हितेश्वर बरुवा, विद्रोही कवि अंबिकाराय चौधुरी और सूफी कवि मफिहुद्दीन अहमद हजारिका का भी असमिया साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। गद्य विधा के क्षेत्र में भी नए साहित्य-रूप सृजित किए गए हैं। कहानीकार वीरेंद्र भट्टाचार्य, चंद्रप्रकाश शइकीया, उपन्यासकार राधिकामोहन गोस्वामी, प्रफुल्लदत्त गोस्वामी, नाटककार ज्योतिप्रसाद आगरवाला, नकुलचंद्र भूइंया आदि प्रमुख गद्यकार हैं। आलोचना के विकास में सत्येंद्रनाथ शर्मा, महेश्वर नेओग आदि का विशेष योगदान है। ध्यातव्य है कि इन गद्यकारों ने लेखन के क्रम में विधाओं का अतिक्रमण भी किया है। फलतः इन्हें किसी एक गद्य विधा तक सीमित करना इनकी प्रतिभा की अनदेखी होगी।

असम प्रदेश शंकरदेव-माधवदेव की पवित्र भूमि रही है। असमिया साहित्य भक्ति काल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पहलुओं को अपने में समेटे हुए है। आधुनिक काल तक आते-आते असमिया साहित्य में यथार्थवाद, प्रगतिवाद और मानवतावाद ने जगह ले ली। आज असमिया साहित्य की विषय-वस्तु केवल ईश्वर तक या राजा-महाराजाओं के शासन तक सीमित नहीं है। अब साहित्य का मिजाज बदल चुका है। साहित्य में अब केवल उच्च वर्ग ही नहीं, मध्य और निम्न वर्ग अर्थात् सर्वसाधारण ने भी स्थान ले लिया है।

वर्ष 2018 असमिया साहित्य के लिए बहुत ही उपलब्धिपूर्ण रहा। इस वर्ष साहित्य के क्षेत्र में नए

318 CHD/2020—3

© Govt. of India
Controller of Publication

पी. ई. डी. नं. 1002.
450 - 2018 (DSK-II)

मूल्य :

देश में	Inland	₹ 180/-
विदेश में	Foreign	$ 2.41/-
		£ 1.83/-

उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
पश्चिमी खंड–7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–110066
www.chdpublication.mhrd.gov.in

प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली – 110064 द्वारा मुद्रित